17 जून 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 6 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

46वाँ श्री वीतराग-विज्ञान शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का -

दीक्षान्त व समापन समारोह सम्पन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ 46वेंश्री वीतराग-विज्ञान शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का दीक्षान्त व समापन समारोह दिनांक 30 मई को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री ऋषभकुमारजी शाहगढ मंचासीन थे। इसके अतिरिक्त सभी विद्वत्गण एवं आयोजन समिति के समस्त पदाधिकारीगण मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के दीक्षान्त भाषण के उपरान्त शिविर संयोजक श्री प्रमोदजी मोदी ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया।

समारोह में आयोजन समिति द्वारा ग्रन्थ एवं श्रीफल भेंटकर समस्त शिक्षकों का सम्मान किया गया।

बायें से दायें - कु. विभूति जैन सागर, कु. सुप्रिया जैन गढाकोटा, कु.अनुभा जैन सागर, कु. शुचि जैन गौरझामर, हिमांशु जैन जयपुर

बालबोध प्रशिक्षण के परीक्षा परिणाम के अन्तर्गत प्रथम स्थान कु. सुप्रिया जैन सुपुत्री श्री राकेश जैन गढाकोटा ने (89%), द्वितीय स्थान कु. विभूति जैन सुपुत्री श्री प्रमोद जैन सागर (86.5%) व हिमांशु जैन सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जैन जयपुर ने (86.5%) एवं तृतीय स्थान कु. शुचि जैन सुपुत्री श्री सुधीरकुमार जैन गौरझामर (86%) व कु. अनुभा जैन सुपुत्री श्री उमेश जैन सागर (86%) ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण के परीक्षा-परिणाम के अन्तर्गत प्रथम स्थान सौम्य जैन पुत्र श्री शिखरचन्दजी शास्त्री सागर ने (88%), द्वितीय स्थान श्रीमती प्रियंका जैन धर्मपत्नी श्री गणतंत्र शास्त्री आगरा ने (87.5%) एवं तृतीय स्थान कु. अनुभूति जैन सुपुत्री श्री अशोककुमार जैन नागपुर (86%) व कु. विपाशा जैन सुपुत्री श्री राजकुमार शास्त्री बांसवाड़ा (86%) ने प्राप्त किया।

बायें से दायें : श्री सौम्य जैन सागर, श्रीमती प्रियंका जैन आगरा, कु. अनुभूति जैन नागपुर एवं कु. बिपाशा जैन बांसवाड़ा

ज्ञातव्य है कि बालबोध प्रशिक्षण हेतु लगभग 468 छात्रों ने प्रवेश लिया था, जिसमें से 340 छात्रों ने परीक्षा दी। इसमें से 113 छात्रों ने विशेष योग्यता (75% से अधिक अंक), 149 ने प्रथम श्रेणी, 35 ने द्वितीय एवं 3 छात्रों ने तृतीय श्रेणी के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की।

प्रवेशिका प्रशिक्षण हेतु 87 छात्रों ने प्रवेश लिया था, जिसमें से 68 छात्रों ने परीक्षा दी। इनमें से 25 छात्र विशेष योग्यता (75% से अधिक अंक), 30 छात्र प्रथम श्रेणी एवं 13 छात्र द्वितीय श्रेणी के साथ उत्तीर्ण हुए।

बालबोध प्रशिक्षण हेतु 468 छात्रों की संख्या अभी तक के प्रशिक्षण शिविरों में आये हुए प्रशिक्षणार्थियों की सर्वाधिक रिकॉर्ड संख्या है।

इस प्रकार इन प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से अभी तक कुल 9311 अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

अखिल भारतवर्षीय विद्वत्परिषद द्वारा -

निश्चय-व्यवहार गोष्ठी संपन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ मकरोनिया में 46वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में निश्चय-व्यवहारनय : एक अनुशीलन विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. राजेन्द्र कुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर तथा डॉ. अशोकजी गोयल ने निश्चय-व्यवहार के विभिन्न पक्षों पर विस्तृत चर्चा की।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. प्रतीति पाटील शास्त्री ने एवं संचालन डॉ. अशोकजी गोयल दिल्ली ने किया। इसके पूर्व विद्वत्परिषद द्वारा वर्षभर चलाई गई गतिविधियों एवं उसकी भावी कार्य योजना श्री अखिलजी बंसल ने प्रस्तुत की।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

79 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १३८

अब प्रस्तुत गाथा में चित्त की कलुषता के स्वरूप का कथन करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

कोधो व जदा माणो माया लोभो व चित्तमासेज्ज।
जीवस्स कुणदि खोहं कलुसो त्ति य तं बुधा बेंति।।१३८।।

(हरिगीत)

अभिमान माया लोभ अर, क्रोधादि भय परिणाम जो।
सब कलुषता के भाव ये हैं, क्षुभित करते जीव को।।१३८।।

जो क्रोध, मान, माया तथा लोभ चित्त का आश्रय पाकर जीव को क्षोभ उत्पन्न करते हैं, उस क्षोभ को ज्ञानी 'कलुषता' कहते हैं।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि क्रोध, मान, माया और लोभ के उदय से चित्त का क्षोभ कलुषता है। इन्हीं कषायों के मन्द उदय से चित्त की प्रसन्नता अकलुषता है। वह अकलुषता कदाचित् कषाय का विशिष्ट क्षयोपशम होने पर अज्ञानी को भी होती है; कषाय के उदय का अनुसरण करने वाली परिणति में से उपयोग को आंशिक रूप से विमुख किया हो तब मध्यम भूमिकाओं में कदाचित् ज्ञानी को भी वह अकलुषता का भाव होता है।

कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

क्रोध, मान, माया, लोभ, तीव्र रूप उदै आये,
चित्त विषैं छोभ होय, संकलेस भावतैं।
सोई चित्त–कलुषाई ग्रन्थ में बताई सदा,
चित्त की प्रसन्नताई मंद उदै दावतैं।।
कदाचित्करूप लसै सबही कसाय पुंज,
ग्यानी औ अग्यानी विषै जैसें ही कहावतैं।
चित्त की कलुषताई दूर करि सकै ग्यानी,
जिनने बताई सदा वस्तु कै लखावतैं।।१२१।।

(दोहा)

चित्त–कलुष जहाँ है नहीं, सो है अलख लखाव।
ताकै लखते लखत है, अलख सुलख का भाव।।१२२।।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि जिस समय शुद्ध आत्मा का आश्रय छूटता है, उस समय क्रोध–मान–माया तथा लोभ के जो परिणाम होते हैं, उन आकुलता के परिणामों को कलुषित परिणाम कहते हैं। अज्ञानी जीव ऐसा मानता है कि 'मैं पर की पर्यायों को बदल सकता हूँ।' जबकि ज्ञानी जीव ऐसा मानता है कि 'मैं परद्रव्य में फेरफार कर ही नहीं सकता। ज्ञानी चैतन्य स्वभाव की दृढ़ श्रद्धा रखता है और अज्ञानी पर कर्तृत्व के अभिमान से दुःखी रहता है। क्रोधादि सभी कषायों से अज्ञानी पीड़ित रहता है। यद्यपि ज्ञानी के अप्रत्याख्यान आदि क्रोधादि का अस्तित्व है, पर ज्ञानी का उनमें एकत्व नहीं है।''

उक्त कथन का तात्पर्य यह है कि यद्यपि अज्ञानी को भी मन्द कषाय होती है, परन्तु दया, दान आदि के भाव भी अज्ञानी को होते हैं, परन्तु वह ऐसा मानता है कि राग की मंदता मुझे लाभदायक है, इस कारण उसे मिथ्यात्व का पाप बना रहता है तथा मन्दकषाय तो ज्ञानी को भी होती, परन्तु उसे पर में अकर्तृत्व का भान होने से वह उनका कर्त्ता नहीं बनता।●

राष्ट्रीय प्राकृत संगोष्ठी सफलतापूर्वक संपन्न

नई दिल्ली : यहाँ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान एवं श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 12 मई तक राष्ट्रीय प्राकृत संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर उद्घाटन व समापन सत्रों के अतिरिक्त कुल 25 सत्रों का आयोजन हुआ, जिसमें 120 गवेषणापूर्ण शोध–आलेख प्रस्तुत किये गये एवं इन पर गंभीर चर्चा हुई।

दिनांक 10 मई को 'प्राकृत का आगम–साहित्य' वर्ग के अन्तर्गत दिगम्बर व श्वेताम्बर जैन परम्पराओं के आगमिक साहित्य का ऐतिहासिक, भाषिक, विषयगत एवं साहित्यिक वैशिष्ट्य से संबंधित विषयों पर शोध–आलेख प्रस्तुत हुये। इसमें प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर ने एवं सत्रसंचालन डॉ. जयकुमार उपाध्ये दिल्ली ने किया। द्वितीय शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. सागरमल जैन शाजापुर ने एवं सत्र संचालन डॉ. अनेकान्त कुमार जैन दिल्ली ने किया। तृतीय शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. श्रीयांश कुमार सिंघई जयपुर ने एवं सत्र संचालन डॉ. धर्मेन्द्र जैन जयपुर ने किया।

कार्यक्रम में प्राकृत का रूपकसाहित्य (नाट्य साहित्य), प्राकृत का काव्य–साहित्य, प्राकृत का कथा–साहित्य, प्राकृत का व्याकरण–साहित्य, प्राकृत का अभिलेखीय–साहित्य, प्राकृत का लाक्षणिक–साहित्य, प्राकृत की पाण्डुलिपियाँ, प्राकृत का भाषिक इतिवृत्त एवं वर्गीकरण इत्यादि वर्गों के अन्तर्गत अनेक शोध आलेख अनेक विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किये गये।

संगोष्ठी का समापन सत्र दिनांक 12 मई को सायंकाल हुआ, जिसमें निष्कर्ष के रूप में तय किया गया कि प्राकृत भाषा और साहित्य के विषय में आज तक हुए कार्यों की सूचना तथा इस क्षेत्र में कार्य करने वाले विद्वानों, शोधार्थियों, लेखकों आदि का विवरण देने वाली एक 'प्राकृत' नामक वेबसाइट बनायी जाये। इसमें देश–विदेश में प्राकृत भाषा साहित्य के क्षेत्र में हो रहे कार्यों व कार्यक्रमों (संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, परियोजना, परिसंवाद आदि) का भी विवरण दिया जाये। साथ ही यह भी सुविधा दी जाये कि कोई भी व्यक्ति इस क्षेत्र में कोई सूचना की जिज्ञासा रखे तो विशेषज्ञ उसे उस विषय में प्रामाणिक जानकारी दें। इसमें प्राकृत की पाण्डुलिपियों, दुर्लभ–पुस्तकों, ग्रन्थकारों, निजी पुस्तकालयों आदि की सूचनायें भी यथासंभव रीति से उपलब्ध करायी जाये।

अन्त में सभी विशिष्टजनों का तिलक, माल्यार्पण एवं शॉल समर्पण द्वारा स्वागत किया गया एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सुदीपकुमारजी जैन ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए सभी द्वारा पारित प्रस्तावों का प्रारूप प्रस्तुत किया। **– डॉ. सुदीप जैन, दिल्ली**

मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) के **प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून 2012 के अंतिम सप्ताह में होने जा रही है।** परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व (लगभग 25 जून तक) सभी परीक्षार्थियों को एनरोलमेंट नम्बर व प्रश्नपत्र भेज दिए जावेंगे। जिन परीक्षार्थियों ने अभी भी परीक्षा की तैयारी शुरु नहीं की है, वे शीघ्र तैयारी में जुट जावें।

परीक्षा कार्यक्रम निम्नानुसार है –

परीक्षा कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-1

2. द्वितीय प्रश्नपत्र : छहढाला (70 अंक)+सत्य की खोज (30 अंक)

द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1

2. द्वितीय प्रश्नपत्र : लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष –

1. प्रथम प्रश्नपत्र : गुणस्थान विवेचन

2. द्वितीय प्रश्नपत्र : क्रमबद्धपर्याय (70 अंक) + सामान्य श्रावकाचार (30 अंक)

द्वितीय वर्ष –

1. प्रथम प्रश्नपत्र : समयसार-पूर्वरंग और जीवाजीवाधिकार

2. द्वितीय प्रश्नपत्र : गोम्मटसार कर्मकाण्ड -प्रथम अध्याय

तृतीय वर्ष –

1. प्रथम प्रश्नपत्र : समयसार-कर्ताकर्माधिकार

2. द्वितीय प्रश्नपत्र : गोम्मटसार जीवकाण्ड-गाथा 70 से 215 तक (97 से 112 गाथा छोड़कर)

ध्यान रहे – परीक्षा बोर्ड कार्यालय से जानकारी चाहने हेतु परीक्षार्थी अपना एनरोलमेंट नम्बर का उल्लेख अवश्य करें; ताकि आपके द्वारा चाही गई जानकारी शीघ्र मिल सके। **– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)**

हार्दिक आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में लगने वाला आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 22 जुलाई से 31 जुलाई, 2012 तक आयोजित होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें; ताकि आपके आवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से हो सके।

श्रुत पंचमी पर्व सानन्द संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ लाला का बाजार स्थित दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल में जिनवाणी की आराधना का महापर्व श्रुतपंचमी दिनांक 26 मई से 1 जून तक सानन्द संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित गुलाबचंदजी जैन बीना द्वारा विभिन्न विषयों पर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा समयसार के सर्वविशुद्ध अधिकार पर एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन प्रवचनों के पश्चात प्रवचन आधारित प्रश्नमंच का भी आयोजन किया गया। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत प्राचीन कवियों द्वारा रचित जिनेन्द्र भक्तियों को श्री श्यामलालजी विजयवर्गीय, श्री अमरजी, श्री विमलजी, श्री सुबोधजी एवं मंगलार्थी देवेन्द्र जैन ने प्रस्तुत किया।

नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा अमायन की कार्यकारिणी का चुनाव हुआ, नवीन कार्यकारिणी इसप्रकार है –

इसमें **अध्यक्ष** के रूप में श्री अजित जैन, **मंत्री** श्री अशोक जैन एवं **कोषाध्यक्ष** श्री धरणेन्द्र कुमार जैन चुने गये।

सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

हार्दिक धन्यवाद !

1. रायपुर (छत्तीस.) निवासी कु. अंशिका जैन सुपुत्री पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर की पुण्य स्मृति में दिनांक 28 मई को 251/- रुपये प्राप्त हुये।

2. घुवारा (म.प्र.) निवासी श्रीमती केसरबाई के देहावसान पर 500/- रुपये की राशि जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुई।

हार्दिक बधाई !

श्रीमती शान्तिदेवी व श्री धन्यकुमार जैन जयपुर वाले सूरत के सुपौत्र चि. स्नेहिल की सगाई **श्री बाबूलालजी झांझरी इचलकरणजी वालों की सुपुत्री कुमारी प्रीति** के साथ दिनांक 30 अप्रैल को संपन्न हुई। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 250-250/- रुपये प्राप्त हुये।

वैराग्य समाचार

रतलाम (म.प्र.) निवासी पण्डित सिद्धार्थजी दोशी की धर्मपत्नी श्रीमती मैना दोशी का दिनांक 3 मई को 82 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया।

आपकी स्मृति में 21 हजार रुपये की राशि टोडरमल महाविद्यालय हेतु सधन्यवाद प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

पण्डित कैलाशचंदजी जैन (बुलन्दशहर वाले) के जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में तीर्थधाम मंगलायतन में आयोजित –

मंगल समर्पण समारोह अभूतपूर्व उपलब्धियों के साथ सानन्द संपन्न

● गुरुदेवश्री के प्रभावनारूपी वटवृक्ष की सभी शाखाओं की उपस्थिति ● अध्यात्म जगत के शताधिक विद्वानों का समागम ● जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सात भागों का लोकार्पण ● आचार्य भगवन्तों, ज्ञानी–धर्मात्माओं एवं गुरुदेवश्री की स्टेच्यू का अनावरण ● नवनिर्मित स्वाध्याय भवन का उद्घाटन ● मंगल समर्पण ग्रन्थ का ऐतिहासिक लोकार्पण ● सम्पूर्ण देश एवं विदेश से सैंकड़ों साधर्मियों का मिलन ● हजारों रूपयों के सत्साहित्य का विक्रय ● आगामी अनेक कार्यक्रमों की घोषणाएँ।

मंगलायतन–अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम मंगलायतन में दिनांक 9 से 11 जून तक पण्डित कैलाशचंदजी जैन के 100वें वर्ष में प्रवेश करने के अवसर पर 'मंगल समर्पण' समारोह अनेकानेक ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित ज्ञानचंदजी जैन विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रकाशदादा मैनपुरी, ब्र. कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित मुकेशजी तन्मय विदिशा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित आलोकजी जैन कारंजा, पण्डित संजीव जैन दिल्ली, पण्डित शान्तिलालजी महिदपुर, पण्डित अरुणजी जैन अलवर, पण्डित अरहंतजी झांझरी उज्जैन, पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, पण्डित कमलजी जैन पिड़ावा, पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित पद्मचंदजी जैन सर्राफ आगरा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त स्थानीय व भिण्ड संभाग में ग्रुप शिविर के विद्वान भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के प्रात:कालीन स्वाध्याय से हुआ। तत्पश्चात् तीर्थधाम मंगलायतन स्थित पण्डित कैलाशचंदजी जैन के निवास से मंगल शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। श्री बाहुबली जिनमन्दिर में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, छिन्दवाड़ा द्वारा किया गया। मंगल कलश की स्थापना का सौभाग्य पण्डित कैलाशचंदजी जैन परिवार के साथ–साथ अमेरिका निवासी श्रीमती ज्योत्स्नाबेन तथा आगरा, मेरठ, जबलपुर और सहारनपुर मुमुक्षु मण्डल की आत्मार्थी बहिनों को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् आचार्य कुन्दकुन्द प्रवचन मण्डप के बाह्य परिसर में स्थापित गुरुदेवश्री के आदमकद स्टेच्यू के अनावरणपूर्वक प्रवचन मण्डप का उद्घाटन हुआ। स्टेच्यू का अनावरण श्री निरंजनभाई सुरेन्द्रनगर मण्डल व ब्र. हेमन्तभाई गाँधी सोनगढ द्वारा किया गया। प्रवचन मण्डप में सर्वप्रथम गुरुदेवश्री द्वारा नैरोबी में हुए समयसार की 17–18वीं गाथा के वीडियो प्रवचन हुए।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर एवं मुख्य अतिथि श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर थे। इनके अतिरिक्त सभी समागत विद्वानों के साथ–साथ श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री महाचंदजी जैन भीलवाड़ा, श्री ए.के.जैन रुड़की, श्री भरतभाई कारंजा भी मंचासीन थे। मंचासीन अतिथियों का स्वागत डॉ. राजकुमार जैन, श्री मुकेश जैन, श्री स्वप्निल जैन, श्री अनिल जैन–पावना परिवार द्वारा तिलक लगाकर व अंगवस्त्र पहिनाकर किया गया। इस मंगल महोत्सव के उद्घाटन का लाभ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बिजौलिया (राज.) को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर पण्डित कैलाशचंदजी जैन द्वारा रचित जैन सिद्धांत प्रवेश रत्नमाला के सात भागों का विमोचन विभिन्न प्रान्तों से आये विद्वानों, पण्डित कैलाशचंदजी जैन परिवार एवं तीर्थधाम मंगलायतन द्वारा किया गया। साथ ही पण्डितजी के अठारह वीडियो प्रवचनों की तीन वी.सी.डी.'मंगल देशना' का विमोचन कानपुर, कन्नौज/मण्डला, दिल्ली/मुजफ्फरनगर मुमुक्षु मण्डल के साधर्मियों द्वारा किया गया।

तत्पश्चात् पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा पण्डित कैलाशचंदजी जैन के जीवन पर प्रकाश डालते हुए स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ।

दोपहर में पण्डित रजनीभाई, ब्र. हेमन्तभाई गाँधी द्वारा स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ एवं 'कारण–कार्य व्यवस्था' पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस गोष्ठी में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज एवं श्रीमती बीना जैन देहरादून ने अपने विचार व्यक्त किये।

सायंकालीन सत्र पण्डित कैलाशचंदजी जैन के वीडियो प्रवचन से प्रारंभ होता था, तत्पश्चात जिनेन्द्र भक्ति एवं पण्डित बाबूभाई मेहता द्वारा बालकक्षा का आयोजन किया गया। रात्रि में पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा द्वारा स्वाध्याय का लाभ मिला। तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई, जिसमें श्रीमती बीना जैन देहरादून का योगदान उल्लेखनीय रहा।

दिनांक 10 जून को ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रात:कालीन प्रौढकक्षा का लाभ मिला। प्रात: पूजन–विधान, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् प्रवचनमण्डप में स्थापित आचार्य कुन्दकुन्द, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के स्टूच्यू का अनावरण किया गया। साथ ही आचार्य अमृतचंद्र, नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती, समन्तभद्राचार्य, जिनसेनाचार्य एवं पण्डित बनारसीदासजी, टोडरमलजी, दौलतरामजी के स्टूच्यू का भी अनावरण किया गया। इसके साथ ही सोनगढ के चित्र, समाधिमरण, सुकुमाल मुनिराज, गजकुमार मुनिराज, यशोधर मुनिराज के चित्रों का भी अनावरण किया गया।

समारोह के अन्तर्गत इस सभा की अध्यक्षता पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अच्युतानन्दजी मिश्र एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्मभूषण डॉ. गोपालदासजी नीरज, श्री हितेन ए. सेठ मुम्बई, श्री अक्षय दोशी मुम्बई व श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट के समस्त संस्थागत ट्रस्टी मंचासीन थे।

मंगल समर्पण ग्रन्थ का लोकार्पण करते हुए विद्वत्जन एवं श्रेष्ठीगण

इस अवसर पर मंगल समर्पण ग्रन्थ का लोकार्पण किया गया। समर्पण से पूर्व पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया ने ग्रन्थ का परिचय दिया। स्वागत करने की श्रृंखला में सर्वप्रथम पावना परिवार द्वारा अपने वयोवृद्ध लौहपुरुष का स्वागत किया गया, तत्पश्चात् संस्थागत ट्रस्टियों, सम्पूर्ण देश–विदेश से पधारे मुमुक्षु भाइयों द्वारा माल्यार्पण, शॉल, पगड़ी, मोमेन्टो आदि प्रदान कर भावभीना अभिनन्दन किया गया।

कार्यक्रम में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने भी पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय की ओर से पण्डित कैलाशचंदजी का शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र भेंट कर स्वागत किया।

दोपहरकालीन सभा में ब्र. हेमचंदजी एवं पण्डित अभयजी देवलाली के स्वाध्याय का लाभ मिला। तत्पश्चात् 'आत्मानुभूति की प्रक्रिया' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

सायंकाल पण्डित कैलाशचंदजी के जीवन पर आधारित पण्डित कैलाशचंद जैन गौरव गाथा नामक वृत्तचित्र सीडी का ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली और ट्रस्टी श्री अजितजी जैन बड़ोदरा द्वारा विमोचनपूर्वक प्रदर्शन किया गया।

अन्तिम दिन के.के.पी.पी.एस. उज्जैन और जैन युवा फैडरेशन भिण्ड द्वारा आयोजित बाल संस्कार ग्रुप शिविर का समापन, भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के धार्मिक परीक्षा परिणाम और पारितोषिक वितरण आदि कार्यक्रम संपन्न हुये। भिण्ड ग्रुप शिविर में सहयोग करने वाले सभी विद्वानों का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कैलाशचंदजी के परिवार द्वारा मंगल समर्पण ग्रन्थ, मोमेन्टो, मंगल देशना, पण्डित कैलाशचंदजी जैन जीवन गाथा, तीर्थधाम मंगलायतन : एक आह्वान – इन पाँच डीवीडी का सेट प्रत्येक परिवार को भेंट स्वरूप दिया गया। समारोह में कुल 96 हजार रुपये का साहित्य विक्रय हुआ।

कार्यक्रम में मेरठ, दिल्ली, अहमदाबाद आदि स्थानों से लगभग 1600 साधर्मीजन उपस्थित थे। अन्त में सम्मेदशिखरजी में नवम्बर माह में होने वाले पंचकल्याणक का आमंत्रण दिया गया।

गुरुदेवश्री के प्रभावनारूपी वटवृक्ष की सभी शाखाओं के प्रतिनिधि और तीर्थधाम मंगलायतन के संस्थागत ट्रस्टियों के रूप में उपस्थिति इसप्रकार रही – श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट सोनगढ हस्ते श्री हंसमुखभाई वोरा, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर हस्ते श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली हस्ते श्री प्रवीणभाईजी वोरा, श्री आचार्य कुन्दकुन्द जैन जागृति सेन्टर पौन्नूर हस्ते श्री हितेनभाई ए. सेठ, श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट ध्रुवधाम बांसवाड़ा हस्ते श्री महिपाल जैन, श्री कुन्दकुन्द–प्रवचन–प्रसारण संस्थान उज्जैन हस्ते श्री विमलदादा झांझरी, श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर हस्ते श्री ज्ञानचंद जैन, श्री कुन्दकुन्द कहान पण्डित बाबूभाई मेहता चैरिटेबल ट्रस्ट चैतन्यधाम अहमदाबाद हस्ते श्री अमृतभाई मेहता, श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली हस्ते श्री आदीश जैन।

सम्पूर्ण कार्यक्रम के सूत्रधार श्री पवनजी जैन द्वारा समस्त विद्वानों, विशिष्ट अतिथियों एवं आत्मार्थी बन्धुओं के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

इसप्रकार पण्डित कैलाशचंदजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हुआ मंगल समर्पण समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ।

विद्वत्परिषद के प्रदेश संयोजक नियुक्त

सागर (म.प्र.) : यहाँ शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर अखिल भारतीय दि. जैन विद्वत्परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 27 मई को संस्था के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक में प्रदेश स्तर पर इकाईयाँ गठित कर तत्त्वप्रचार की गतिविधियों को व्यवस्थित रूप प्रदान करने का निर्णय लिया गया। निर्णयानुसार **दिल्ली, हरियाणा व पंजाब** ईकाई के संयोजक डॉ. वीरसागर जैन व सहसंयोजक श्रीमती ममता जैन, **राजस्थान** के संयोजक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर व सहसंयोजक कु. परिणति पाटील शास्त्री जयपुर, **मध्यप्रदेश** के संयोजक पण्डित अरुणकुमारजी मोदी सागर व सहसंयोजक पण्डित सौरभ शास्त्री इन्दौर, **महाराष्ट्र** के संयोजक डॉ. हुकमचंद संगवे सोलापुर व सहसंयोजक पण्डित आलोक शास्त्री कारंजा, **उत्तरप्रदेश** के संयोजक डॉ. राजीव प्रचण्डिया व सहसंयोजक पण्डित कल्पेन्द्र जैन खतौली, **प. बंगाल, बिहार, झारखण्ड व उड़ीसा** के संयोजक डॉ. ऋषभचंद फौजदार वैशाली व सहसंयोजक पण्डित अमित शास्त्री कोलकाता, **गुजरात** के संयोजक पण्डित ऋषभ शास्त्री अहमदाबाद व सहसंयोजक पण्डित ध्रुवेश शास्त्री अहमदाबाद, **दक्षिण भारत** के संयोजक पण्डित जम्बू कुमार शास्त्री चेन्नई व सहसंयोजक डॉ. उमापति शास्त्री चेन्नई को नियुक्त किया गया।

सभी पदाधिकारी केन्द्रीय कार्यकारिणी के सहयोग से सदस्यता अभियान चलाकर जिनागम के विद्वानों को संस्था से जोड़ेंगे व उनके सहयोग से शिविरों का संचालन, साहित्य का प्रकाशन व वितरण तथा आध्यात्मिक गतिविधियों को जन–जन तक पहुँचाने हेतु प्रयास करेंगे।

बैठक में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के लिये आमंत्रित विद्वानों में डॉ. दामोदर शास्त्री लाडनूँ, डॉ. उदयचंद जैन उदयपुर, डॉ. महेश शास्त्री भोपाल तथा डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा का चयन किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण डॉ. अशोककुमार गोयल शास्त्री ने किया।

– अखिल बंसल, महामंत्री

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

96 दूसरा प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आज के श्रोताओं की स्थिति तो यह है कि तत्त्व की गंभीर से गंभीर चर्चा क्यों न चल रही हो; तो भी वे बार–बार घड़ी देखने लगते हैं।

यदि प्रवचन में एक घंटा से ५ मिनिट भी अधिक हो जावें तो प्रवचनकार को घड़ी दिखाने लगते हैं। फिर भी यदि वक्ता प्रवचन बंद न करें तो घड़ी लाकर सामने रख देते हैं। यह सब क्या है ?

पण्डित टोडरमलजी अनुभवसंबंधी प्रश्न पूछनेवालों को उत्तर देने के पहले धन्यवाद देते हैं।

जिन पत्रों में अनुभवसंबंधी प्रश्न पूछे गये हों, ऐसे पत्र तो अनुभवी विद्वानों के पास ही आते हैं। वे लोग टोडरमलजी के ज्ञान पर ही रींझे थे और टोडरमलजी भी उनकी आध्यात्मिक रुचि पर रींझ गये, उन्हें धन्य कहने लगे, उनका अभिनंदन करने लगे।

एक सेठजी के पास डाकुओं का पत्र आया। उसमें लिखा था कि इतने लाख रुपये लेकर अमुक स्थान पर आ जावो, नहीं तो हम आपके लड़के को पकड़ कर ले जावेंगे। सेठजी ने क्या किया – इसका तो मुझे पता नहीं; पर हमने तो आजतक किसी डाकू के हस्ताक्षर ही नहीं देखे। लगता है कि इस भव में ऐसा अवसर कभी प्राप्त भी नहीं होगा; क्योंकि हमारे पास ऐसा कुछ है ही नहीं कि जो डाकुओं को चाहिए। डाकुओं के पत्र तो सेठों के पास ही आते हैं, पण्डितों के पास नहीं।

अध्यात्म के विशेषज्ञ विद्वानों के पास तो अध्यात्मरुचि सम्पन्न आत्मार्थी भाई–बहिनों के ही पत्र आते हैं, उनसे मिलने भी वही लोग आते हैं। इसप्रकार उन्हें तो सदा सत्समागम ही प्राप्त होता है।

पण्डितजी लिखते हैं कि **'वर्तमानकाल में अध्यात्मरस के रसिक बहुत थोड़े हैं'** इसका अर्थ यह मत समझना कि उनको सुननेवाले योग्य श्रोता उपलब्ध नहीं थे; क्योंकि उनकी सभा का चित्रण साधर्मी भाई रायमलजी इसप्रकार करते हैं –

''तिन विषै दोय जिन मंदिर तेरापंथ्यां की शैली विषै अद्भुत सोभा नैं लीयां, बड़ा विस्तार नैं धर्‌यां बणें। तहां निरंतर हजारां पुरष– स्त्री देवलोक की सी नांई चैत्यालै आय महा पुन्य उपारजै, दीर्घ काल का संच्या पाप ताका क्षय करै।

सौ पचास भाई पूजा करने वारे पाईए, सौ पचास भाषा शास्त्र बांचनें वारे पाईए, दश बीश संस्कृत शास्त्र बांचनें वारे पाईए, सौ पचास जनैं चरचा करनें वारे पाईए और नित्यान का सभा के सास्त्र का व्याख्यान विषै पांच सै सात सै पुरष तीन सै च्यारि सै स्त्रीजन सब मिलि हजार बारा सै पुरष स्त्री शास्त्र का श्रवण करै, बीस तीस बायां शास्त्राभ्यास करै, देश देश का प्रश्न इहां आवै तिनका समाधान होय उहां पहंचै, इत्यादि अद्भुत महिमां चतुर्थकालवत या नग्र विषै जिनधर्म की प्रवर्त्ति पाइए है।[१]

सभा विषै गोमट्टसारजी का व्याख्यान होय है। सो बरस दोय तौ हूवा अर बरस दोय तांई और होइगा। एह व्याख्यान टोडरमल्लजी करैं हैं।[२]

सारां ही विषै भाईजी टोडरमलजी के ज्ञान का क्षयोपशम अलोकीक है जो गोमट्टसारादि ग्रंथां की संपूर्ण लाख श्लोक टीका बणाई और पांच सात ग्रंथां का टीका बणायवे का उपाय है।

सो आयु की अधिकता हुंवा बणैंगा।

अर धवल महाधवलादि ग्रंथां के खोलबा का उपाय कीया वा उहां दक्षिण देस सूं पांच सात और ग्रंथ ताड़पत्रां विषै कर्णाटी लिपि में लिख्या इहां पधारे हैं, ताकूं मलजी बांचैं हैं, वाका यथार्थ व्याख्यान करैं हैं वा कर्णाटी लिपि मैं लिखि ले हैं। इत्यादि न्याय व्याकरणगणित छंद अलंकार का याकै ज्ञान पाईए है। ऐसे पुरुष महंत बुद्धि का धारक ईं काल विषै होनां दुर्लभ है। तातैं यांसूं मिलें सर्व संदेह दूरि होइ है।

घणी लिखबा करि कहा, आपणां हेत का बांछीक पुरुष सीघ्र आय यासूं मिलाप करो।[३]''

उक्त उद्धरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि टोडरमलजी साहब को न श्रोताओं की कमी थी और न उनके प्रति वात्सल्यभाव रखनेवाले की कमी थी।

तत्कालीन समय में अध्यात्म के रसिकों की कमी की चर्चा तो सम्पूर्ण भारतवर्ष के संबंध में थी; जो उचित ही है कि करोड़ों में हजारों तो बहुत थोड़े ही होते हैं न ?

जिस समय यह पत्र लिखा गया था उस समय और उसके सात–आठ वर्ष तक पण्डितजी की आर्थिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं थी। वे बाल–बच्चोंवाले गृहस्थ विद्वान थे। उनके दो लड़के और एक लड़की थी। लड़कों के नाम हरिचंद और गुमानीराम थे। गुमानीरामजी उन जैसे ही विद्वान थे और उन्होंने पण्डित टोडरमलजी के बाद उनके द्वारा विस्तारित आध्यात्मिक क्रान्ति का नेतृत्व किया था।

१. जीवन पत्रिका : पण्डित टोडरमल व्यक्तित्व और कर्तृत्व, पृष्ठ ३३६
२. इन्द्रध्वज विधान महोत्सव पत्रिका : पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व, पृष्ठ ३४०
३. वही, पृष्ठ ३४४

उनके नाम से एक गुमानपंथ नामक पंथ भी चला।

उनके बारे में पण्डित देवीदासजी गोधा सिद्धान्तसार टीका की प्रशस्ति में लिखते हैं –

''....तथा तिनिके पीछे टोडरमलजी के बड़े पुत्र हरीचंदजी तिनिते छोटे गुमानीरामजी महाबुद्धिमान वक्ता के लक्षण कूं धारैं, तिनिके पास किछू रहस्य सुनि करि कछू जानपना भया।''

उक्त रहस्यपूर्णचिट्ठी लिखने के बाद उन्हें अपने नगर जयपुर को छोड़कर शेखावाटी के सिंघाणा नामक गाँव में आजीविका के लिए जाना पड़ा था। वहाँ वे एक जैनी साहूकार के यहाँ मुनीमी का काम करते थे। उस जमाने में १५० किलोमीटर से अधिक दूर जाना परदेश में जाने जैसा ही था।

इतने प्रसिद्ध विद्वान कि उनसे चर्चा करने दूर–दूर से लोग आते थे, पत्रों द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान करते थे; फिर भी उन्हें अपनी आजीविका के लिए इतनी दूर जाकर नौकरी करनी पड़ी थी। यह एक सोचने की बात है। जो भी हो...।

जब साधर्मी भाई रायमलजी उन्हें खोजते हुए सिंघाणा पहुँचे और उनके सामने अपने प्रश्न प्रस्तुत किये तो पण्डित टोडरमलजी ने उनके सभी प्रश्नों के उत्तर गोम्मटसार ग्रंथ के आधार पर दिये। इसकारण उनके करणानुयोग संबंधी ज्ञान की गहराई का पता ब्र. रायमलजी को लगा।

यद्यपि वे अपनी शंकाओं का समाधान करने कुछ दिन के लिए ही वहाँ गये थे; पर उनके सत्समागम की भावना से वहीं ठहर गये।

वे उनसे इतनी गहराई से जुड़ गये कि उनके आग्रह पर टोडरमलजी ने गोम्मटसार की टीका लिखना आरंभ कर दिया तो वे उसके अध्ययन में जुट गये। वे स्वयं लिखते हैं कि वे लिखते गये और हम बाँचते गये।

साधर्मी भाई ब्र. रायमलजी का उक्त कथन इसप्रकार है –

''पीछैं ऐसैं हमारे प्रेरकपणां का निमित्त करि इनकै टीका करनें का अनुराग भया। पूर्वैं भी याकी टीका करने का इनका मनोर्थ था ही, पीछैं हमारे कहनें करि विशेष मनोर्थ भया।

तब शुभ दिन मुहूर्त्त विषै टीका करनें का प्रारंभ सिंघांणा नग्र विषै भया। सो वै तौ टीका बणावते गए, हम बांचते गए।

बरस तीन मैं गोम्मटसार ग्रंथ की अठतीस हजार ३८०००, लब्धिसार क्षपणासार ग्रंथ की तेरह हजार १३०००, त्रिलोकसार ग्रंथ की चौदह हजार १४०००, सब मिलि च्यारि ग्रंथां की पैंसठि हजार (श्लोक प्रमाण) टीका भई।

पीछैं सवाई जैपुर आए। तहां गोमटसारादि च्यारौं ग्रंथां कूं सोधि याकी बहोत प्रति उतराई। जहां सैली छी तहां सुधाइ सुधाइ पधराई। अैसैं या ग्रंथां का अवतार भया।[१]''

उक्त उद्धरण से यह स्पष्ट है कि सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका सिंघाणा में ही लिखी जा चुकी थी। उसके बाद ब्र. रायमलजी के साथ पण्डितजी जयपुर आये और यहाँ सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका अर्थात् गोम्मटसार जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड और लब्धिसार–क्षपणासार की टीका के प्रचार–प्रसार का काम जोरदार ढंग से आरंभ हुआ।

विक्रम संवत् १८१८ में पण्डित टोडरमलजी जयपुर आये। उसके पूर्व लगभग ४ वर्ष तक सिंघाणा रहे। ब्र. रायमलजी उनसे मिलने विक्रम सं. १८१५ में वहाँ पहुँचे और लगभग ३ वर्ष तक वहीं रहें। उसी काल में सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की रचना हुई।

ऐसा लगता है कि साधर्मीभाई रायमलजी ने जयपुरवालों को समझाया होगा कि तुम कैसे लोग हो। तुम्हें इतना बड़ा विद्वान सहज ही उपलब्ध है और तुम लोग उनका लाभ नहीं उठा रहे। उनका अधिकांश समय मुनीमी करने में जा रहा है।

कोई व्यक्ति मात्र आजीविका के लिए आठ–दस घंटे तन तोड़ मेहनत करे, थककर चकनाचूर हो जाये; ऐसी स्थिति में वह अपने आत्मकल्याण के योग्य स्वाध्याय कर ले – यही बहुत है। उससे शास्त्रों की टीका करने जैसे काम की अपेक्षा करना उचित नहीं है; तथापि पण्डितजी ने सिंघाणा में उक्त परिस्थिति में भी यह सबकुछ करके दिखा दिया था। वे अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। (क्रमशः)

१. जीवन पत्रिका : पण्डित टोडरमल व्यक्तित्व और कर्तृत्व, पृष्ठ ३३५

विज्ञान वाटिका छपकर तैयार

दिल्ली : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा उस्मानपुर द्वारा 'विज्ञान वाटिका' नामक पुस्तक छपकर तैयार है। इसमें 500 प्रश्नों का अनुपम संकलन किया गया है। जो महानुभाव इसे खरीदना चाहते हैं वे 40 + 25 (कोरियर) = 65 रुपये का मनी ऑर्डर भेज कर मंगवा सकते हैं।

पुस्तक मंगाने का पता – पण्डित ऋषभ शास्त्री, सी–99, गली नं. 4, जैन मन्दिर के पास, पहला पुस्ता, न्यू उस्मानपुर, दिल्ली – 110053

संपर्क सूत्र – ऋषभ शास्त्री – 9810487471
प्रयंक शास्त्री – 9990211077

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर की ग्रीष्मकालीन परीक्षायें अगस्त 2012 में होने की सम्भावना है। सम्बन्धित पाठशाला केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र छात्र प्रवेश फार्म भरकर परीक्षा बोर्ड कार्यालय को जयपुर भेज देवें। **– प्रबंधक, ओ.पी. आचार्य**

नागपुर-विदर्भ क्षेत्रीय -

31 स्थानों पर सामूहिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन नागपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में सौ. शान्तिदेवी कोमलचंदजी जैन (आमगांव) परिवार के सहयोग से इस वर्ष दिनांक 2 से 10 जून तक 15वाँ सामूहिक शिक्षण शिविर विदर्भ एवं महाकौशल के विभिन्न 31 स्थानों पर सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 2 जून को श्री रोहितभाई शाह नागपुर के करकमलों द्वारा हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आदिनाथजी नखाते ने एवं ध्वजारोहण श्री कोमलचंदजी जैन परिवार नागपुर ने किया।

शिविर में नागपुर (नेहरु पुतला) में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा समयसार, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा निश्चय-व्यवहार एवं ब्र. आरती बेन छिन्दवाड़ा द्वारा 24 ठाणा विषय पर कक्षा ली गई। इसके अतिरिक्त पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री सिद्धांत नागपुर, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित आदेशजी बोरालकर, पण्डित संकेतजी बोरालकर, पण्डित आभाषजी जैन, विदुषी स्वर्णलताजी जैन, विदुषी सुनीता जी, डॉ. शकुनजी सिंघई द्वारा विभिन्न कक्षाओं का लाभ मिला।

नागपुर (तारण-तरण) में पण्डित आशीषजी महाजन वसमतनगर, **काटोल** में विदुषी शुभांगी मांगुलकर, **रामटेक** में पण्डित सुरेशजी बेलोकर वीहीगांव, **शेंदूर जनाघाट** में पण्डित अभिनन्दनजी चौहान आलते, **नेरटिंगलई** में पण्डित अक्षयजी चौहान व पण्डित विशालजी उपाध्ये, **यवतमाल** में पण्डित कुलभूषणजी वाकले वाशिम व पण्डित भूषणजी विरालकर, **आरवी** में पण्डित पीयूषजी सिंगटकर चन्द्रपुर, **चांदूर रेलवे** में पण्डित करणजी दिगम्बरे, **हिवरखेड** में गोम्मटेशजी चौगुले, **पाला** में पण्डित रोहितजी सिदनाथे, **बोरगांव मंजू** में पण्डित संदेशजी बोरालकर व पण्डित अक्षयजी अन्नदाते, **मुर्तिजापुर** में पण्डित स्वप्निलजी जैन व पण्डित अमोलजी महाजन, **विसलरोंघे** में पण्डित विवेकजी गडेकर, **बुतीबोरी** में पण्डित प्रदीपजी धोत्रे व पण्डित जिनकुमारजी जैन, **जरूड** में पण्डित सुमतिनाथ अम्बेकर, **गणेशपुर** में पण्डित श्रीशांतजी उखलकर, **करेली** में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर व पण्डित पीयूषजी गौरझामर, **सिवनी** में पण्डित द्विविजजी सेठी व पण्डित चिन्मयजी कोटा, **हौशंगाबाद** में पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर व पण्डित सूरजजी मगदुम, **सिंगोडी** में पण्डित अंकितजी खडैरी, उभेगांव में पण्डित अशोकजी जैन, **नरसिंहपुर** में पण्डित निशांतजी वारासिवनी, **बाबई** में पण्डित नेमीचंदजी बंडा, **वनखेडी** में पण्डित अविनाशजी जैन, **चांदामेटा** में पण्डित अर्पितजी जैन, **बैतूल** में पण्डित चैतन्यजी जैन, **परासिया** में रूपेन्द्रजी जैन, **चांद** में पण्डित अभिषेकजी जैन व पण्डित सचिनजी जैन द्वारा धर्मलाभ प्राप्त हुआ।

सभी स्थानों पर प्रात: जिनेन्द्र-पूजन, बालकक्षा, प्रौढकक्षा, प्रवचन, सायंकाल में जिनेन्द्र-भक्ति, प्रवचन एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

इस शिविर में 2258 छात्रों सहित 5958 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। सभी स्थानों पर समयसार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, छहढाला, मोक्षमार्गप्रकाशक, भक्तामर स्तोत्र आदि पर प्रवचन व कक्षायें हुई।

शिविर की विशेष उपलब्धि यह रही कि जैन छात्रों के अतिरिक्त 84 मुस्लिम छात्रों एवं 60 अन्य जैनेतर छात्रों ने भी धर्मलाभ लिया।

शिविर का सामूहिक समापन समारोह दिनांक 10 जून को वीतराग भवन नेहरु पुतला नागपुर में संपन्न हुआ, जिसमें सभी 31 स्थानों के प्रथम व द्वितीय छात्रों व स्थानीय प्रदाधिकारियों को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार राशि का वितरण डॉ. शकुन नरेशजी सिंघई नागपुर द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित जितेन्द्रजी राठी नागपुर ने किया।

संपूर्ण शिविर पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर, पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली, पण्डित जितेन्द्रजी राठी नागपुर के संयुक्त मार्गदर्शन में पण्डित पंकजजी दाहतोंडे, पण्डित सतीशजी बोरालकर एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

शिविर में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन नागपुर एवं अ.भा.जैन महिला फैडरेशन नागपुर के कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

ज्ञातव्य है कि आगामी **16वाँ सामूहिक शिक्षण शिविर दिनांक 1 से 9 जून 2013** तक **श्री रोहितभाई शाह (अध्यक्ष-श्रीजैन सेवा मण्डल नागपुर)** के परिवार द्वारा आयोजित किया जायेगा।

- अशोककुमार जैन, नागपुर

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127